Edit with WPS Office

हिंदी साहित्य का इतिहास

विषय :

हिंदी भाषा : उद्भव व विकास

Edit with WPS Office

प्रकरण 1

हिन्दी भाषा : उद्भव और विकास

हिन्दी भाषा : उद्भव

भाषा संसार का नाट्यमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है तथा हृदयतंत्री की झंकार है। भाषा ही हमारे शेष जीवन के साथ संबंध जोड़ने का उपक्रम करती है। वह वाणी को साकार कर हमारी वृत्तियों का प्रकाशन करती है। अतः साहित्य भाषा की सृष्टि है। भाषा वह माध्यम है जिससे साहित्य की कली प्रस्फुटित होती है और भाषा के आश्रय को पाकर जीवन प्राप्त करती हुई पल्लवित और पुष्पित हो उठती है। इस प्रकार एक साधन है, तो दूसरा साध्य।

'हिन्दी भाषा' किसी अकेली भाषा का नाम न होकर एक भाषा समूह का नाम है। इसके पहले भारत में या उत्तरी भारत में अपभ्रंश भाषा का प्रचार था। साहित्य की रचना भी उसी में होती थी। उसके कई भेद थे, जैसे — गुर्जरी अपभ्रंश, शौरसेनी अपभ्रंश, अर्धमागधी अपभ्रंश, मागधी अपभ्रंश आदि। शौरसेनी अपभ्रंश से ब्रजभाषा, खड़ी बोली, बाँगरु, कन्नौजी और बुन्देली ये पाँच बोलियाँ निकलीं। इसी प्रकार अर्धमागधी से अवधी, छत्तीसगढ़ी और बघेली ये तीन बोलियाँ उत्पन्न हुईं। इन्हीं आठ बोलियों या भाषाओं के समूह को हिन्दी भाषा कहा जाता है। आजकल इस समूह में साहित्यिक दृष्टि से गुर्जरी अपभ्रंश से उत्पन्न राजस्थानी (डिंगल) और मागधी से उत्पन्न भोजपुरी, मगही और मैथिली को भी गिना जाता है। इसी हिन्दी समूह में आने वाली भाषाओं में जो साहित्य तैयार किया गया है उसे हिन्दी भाषा का साहित्य कहा जाता है।

हिन्दी भाषा : विकास

डॉ० पीताम्बर के अनुसार सन् 778 ईसा पूर्व ही हिन्दी का प्रचलन था, किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवत् 1050 को ही हिन्दी भाषा के विकास का प्रारम्भिक काल माना है। अन्य विद्वान भी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मान्यता को ही प्राथमिकता देते है। हिन्दी भाषा के विकास की एक लम्बी प्रक्रिया है। अतः अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इसे तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है —

1. **प्रारम्भिक काल (1050 ई० से 1500 ई० तक)**
2. **मध्य काल (1500 ई० से 1800 ई० तक)**
3. **आधुनिक काल (1800 ई० से आज तक)**

1. प्रारम्भिक काल — इस काल में अपभ्रंश की ध्वनियों के अतिरिक्त कुछ स्वतंत्र ध्वनियों का विकास हिन्दी में हुआ। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार — हिन्दी की ड, ढ, व, ह्न, ह्म आदि ध्वनियाँ इसी युग की देन है। इस प्रकार इस काल में हिन्दी भाषा का रूप कुछ स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ, किन्तु यह स्पष्ट है कि प्रारम्भिक अवस्था में अपभ्रंश और हिन्दी का प्रयोग साथ-साथ होता रहा। यही कारण है कि तत्कालीन हिन्दी पर अपभ्रंश का प्रभाव है। कुछ विद्वान तत्कालीन समय के शिलालेख, ताम्रपत्र, प्राचीन पत्रादि, अपभ्रंश काव्य, धार्मिक

Edit with WPS Office

एवं चारण काव्य तथा हिन्दी अथवा पुरानी खड़ी बोली में लिखे साहित्य पर अपभ्रंश के इसी प्रभाव को देखकर इसे पुरानी हिन्दी का एक रूप मानते हैं। यह युग विदेशी शासन का युग था, अतएव हिन्दी भाषा के आरम्भिक विकास में न तो किसी प्रकार की राजकीय सहायता उपलब्ध थी और न ही कोई संरक्षण ही प्राप्त था। फिर भी इस काल में अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी भाषा में सन्देशरासक, पुरातन प्रबन्ध संग्रह तथा कीर्तिलता आदि ग्रंथ रचे गए। चन्दबरदाई, जगनिक, अमीर खुसरो, विद्यापति, नरपति नाल्ह आदि इस युग के प्रमुख कवि हैं।

2. मध्य काल — यह काल हिन्दी भाषा का स्वर्ण काल था। इस युग में भाषा एवं साहित्य का अनुपम विकास हुआ। इस काल के आगमन के साथ ही हिन्दी भाषा का स्वरूप निखरने लगा। इसकी बोलियों के स्वरूप भी स्पष्ट होने लगे। इस काल में क, ख, ग, ज, फ आदि विदेशी ध्वनियों का समावेश हिन्दी भाषा में हो गया था [इसके साथ ही संस्कृत के तत्सम शब्दों, फारसी एवं अरबी के शब्दों तथा अंग्रेजी एवं पुर्तगाली भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी हिन्दी भाषा में धड़ल्ले से होने लगा था] इस समय अपभ्रंश का प्रभाव समाप्त-सा हो गया था। यद्यपि बोलचाल की भाषा में खड़ी बोली को प्रश्रय मिल रहा था किन्तु साहित्यिक दृष्टि से ब्रज एवं अवधी भाषा का ही बोलबाला था। इन दोनों भाषाओं पर बुन्देली और राजस्थानी भाषा का प्रभाव था। सूर और तुलसी के धार्मिक आन्दोलन के कारण इस युग में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप ग्रहण करने में कठिनाइयाँ प्रतीत हो रही थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस काल में अपभ्रंश के आवरण से निर्गत होकर हिन्दी ने ब्रज और अवधी भाषा के द्वारा अपनी स्वतंत्र स्थिति का निर्माण कर लिया। इस काल के प्रमुख कवियों में जायसी, कुतुबन, मंझन, तुलसीदास, मीराबाई, सूरदास, नन्ददास, रसखान, रैदास, मलूकदास, कबीरदास, नानक, केशव, मतिराम, भूषण, घनानन्द आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

3. आधुनिक काल — इस काल का प्रारम्भ 1800 ई० के पश्चात् माना गया है। इस समय के भाषा के क्रमिक विकास पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि खड़ी बोली हिन्दी के बीज चन्दबरदाई, भूषण और कबीर आदि कवियों की वाणी में विद्यमान थे। मुगलों के पतनोपरांत जब यहाँ की सत्ता कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों के हाथ लगी तो उन्होंने सर्वप्रथम इस देश की भाषा की ओर दृष्टिपात किया। आगरा के फोर्ट विलियम कॉलेज में अध्यापन करने वाले लल्लू लाल ने 'प्रेमसागर' और 'नासिकेतोपाख्यान' का हिन्दी में अनुवाद कर वास्तविक हिन्दी भाषा का प्रारम्भ किया। ऐसे समय में आंग्ल शासकों ने खड़ी बोली हिन्दी के गद्य के आविर्भाव हेतु परिस्थिति प्रदान की। मुन्शी सदासुख लाल, इंशा अल्ला खाँ के सम्मिलित प्रयासों से हिन्दी का पौधा अंकुरित हुआ और राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द', राजा लक्ष्मण सिंह तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के कर-कमलों से सिंचन पाकर वह पल्लवित, पुष्पित होने लगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रयासों से यह शिशु-वृक्ष लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने लगा। इस प्रकार जो हिन्दी भाषा ब्रज भाषा के रूप में ब्रज के करील-कुंजों में भटक रही थी अब उसने उस सीमित और संकुचित उपत्यका से बाहर निकल कर समस्त राष्ट्र के विस्तृत वातावरण में विचरण करना प्रारम्भ किया। फलतः हिन्दी में साहित्य की विभिन्न विधाओं का सूत्रपात हुआ। अब खड़ी बोली की कविताओं के साथ ही साथ खड़ी बोली गद्य का रूप भी निखरने लगा। खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवियों में निराला, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार गद्य लेखकों में इंशा अल्ला खाँ, लल्लू लाल, सदल मिश्र, सदासुख लाल, भारतेन्दु

Edit with WPS Office

हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्याम सुन्दर दास, जयशंकर प्रसाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि का विशिष्ट स्थान है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा के विकास की एक लम्बी कहानी है। यद्यपि इस विकास के मार्ग में हिन्दी भाषा को अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसकी विकास की गति अवरुद्ध नहीं हुई। इसने अपनी सहज, स्वाभाविक गति से गतिशील होकर विश्व की समर्थ भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। आज यह किसी भी साहित्यिक विधा को व्यक्त करने में पूर्णतया समर्थ है। इस क्रमिक विकास को देखकर निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का भविष्य परमोज्ज्वल है।